संवाद

# बच्चों पर विश्वास करना ज़रूरी है...

**जुही जैन**

**'पाक्सो' क़ानून पास** हो गया है, और इसके कार्यान्वयन पर भी हम काफी सोच-विचार कर चुके हैं। परन्तु इसके साथ ही हमें ज़रूरत है कुछ खास बातों को समझने और ध्यान में रखने की। माता-पिता, भाई-बहन या अभिभावक, शिक्षिका होने के नाते बच्चों— फिर चाहे वे लड़के हो या लड़कियां, दोनों के साथ एक संवेदनशील संबंध बनाना भी ज़रूरी है। यौन हिंसा एक ऐसा मसला है जिस पर चुप्पी तोड़ना, उसके बारे में किसी को बताना बहुत मुश्किल होता है। फिर कम उम्र के बच्चों के लिए तो इस दर्दनाक सच्चाई से रूबरू होना और भी अधिक कठिन होता है। लिहाज़ा अपने रोज़मर्रा के जीवन में हमें अपने बच्चों के साथ एक ऐसा दोस्ताना रवैया बनाने की कोशिश करनी होगी जिससे वे हिंसा के इस रूप को समझने और इस पर बात करने के लिए सक्षम बन सकें।

बच्चों के साथ यौन हिंसा अक्सर दो तरीक़ो से काम में लाई जाती है। पहला तरीक़ा है बच्चे को औरत पर हिंसा के लिए हथियार के रूप में इस्तेमाल करना। दूसरा, बच्चों के साथ सीधे यौन शोषण, दुर्व्यवहार या शारीरिक छेड़छाड़ करना। दोनों ही हालात में बेहद ज़रूरी है कि बच्चे हिंसा के बारे में समझें तथा इससे सतर्क रहें। साथ ही ज़रूरत पड़ने पर अपने बचाव और मुक़ाबला करने की क्षमता और कौशल जानें। इस रक्षा-प्रतिरक्षा के लिए कुछ ख़ास/आम बातें ज़रूरी हैं।

### रोज़मर्रा की कुछ आम सुरक्षा

- सबसे पहले हर बच्चे को अपना पूरा नाम, माता-पिता का नाम, घर का पता, फ़ोन नम्बर की जानकारी होनी चाहिए। इससे उन्हें अपनी पहचान करने में आसानी होगी।
- बच्चों को कुछ मूल बातों से परिचित कराएं मसलन फ़ोन का इस्तेमाल, ताला खोलना व बंद करना। ज़रूरत पड़ने पर बच्चों को पता होना चाहिए कि माता-पिता को कैसे सूचित किया जाए। किसी वजह से अगर बच्चों के माता-पिता न मिलें तो घर के कोई दूसरे सदस्य जैसे दादी-बाबा/नानी-नाना या किसी भरोसेमंद पारिवारिक दोस्त आदि के बारे में भी जानकारी हो।
- बच्चों के मन में अजनबियों का डर न भरें। बच्चों को यह बताएं कि ज़रूरत पड़ने पर वे किन अजनबियों से मदद ले सकते हैं जैसे पुलिस की वर्दी पहने लोग या पुलिसवाली, डॉक्टर, नर्स, पी.सी.आर. वैन, एम्बयुलैंस इत्यादि।
- हो सके तो बच्चों के पास कुछ ज़रूरी सेवाओं जैसे पुलिस, एम्बयुलैंस आदि के फ़ोन नम्बर रखें।

यह तो हुई कुछ मूल सुरक्षा की बातें जो बच्चे की परवरिश में फ़ायदेमंद साबित हो सकती हैं।

### बच्चे व यौन हिंसा

पर कुछ बहुत ख़ास तरह की बातचीत है जो हमें अपने बच्चों, चाहे बेटी हो या फिर बेटा से अवश्य करनी चाहिए। इनमें सबसे अधिक अहम् बातचीत है छोटे बच्चों को यौन हिंसा से सावधान रहने, यौन हिंसा से बचने, उसे पहचानने और उसके बारे में बात करने की।

### बच्चों पर यौन हिंसा क्यों होती है?

छोटे बच्चों के साथ यौन हिंसा करना बहुत आसान होता है। एक तो बच्चे की उम्र कम होती है और उसके लिए यौन हिंसा को जानना/समझना मुश्किल होता है। दूसरा, अधिकांश मामलों में यौन हिंसा करने वाले बच्चों के जानकार होते हैं जैसे रिश्तेदार-चाचा, मामा, भाई, दादा, नाना आदि, पड़ोसी, दोस्त, देख-रेख करने वाले घरेलू नौकर, ड्राइवर या फिर कोई अन्य क़रीबी व्यक्ति। ये व्यक्ति बच्चों को प्यार करते हैं और इसलिए बच्चा एक दुविधा में पड़ जाता है कि वास्तव में उसके साथ जो हो रहा है वह सही है या ग़लत।

## यौन हिंसा पर समझ बनाएं

इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि हम अपने बच्चों को शुरू से ही यौन हिंसा से आगाह करें। यहां इस बात को भी मानना और समझाना-समझना ज़रूरी है कि यौन हिंसा हिंसा का शिकार सिर्फ़ छोटी बच्चियां ही नहीं होती। हां, छोटी लड़कियों के साथ इसकी तादाद ज़्यादा आम हो सकती है पर यौन हिंसा छोटे लड़कों को भी झेलनी पड़ती है। और छोटा बच्चा चाहे वह लड़का हो या लड़की इस प्रकार की हिंसा से जूझने के लिए तैयार नहीं होता।

यौन हिंसा के बारे में एक और अहम कड़ी यह है कि ऐसा करने वाले व्यक्ति अक्सर इसे एक खेल या फिर अपने और बच्चे के बीच एक 'गुपचुप' सीक्रेट' का रूप दे देते हैं। वह बच्चों को प्यार या फिर डरा-धमका कर यह यक़ीन दिलाते हैं कि यह बात उन दोनों के बीच में रहनी चाहिए। अगर यह बात बच्चे ने मां-बाप को बताई तो कुछ बहुत बुरा हो जाएगा। इसलिए इसे चुपचाप सहने के अलावा बच्चे के पास कोई विकल्प नहीं होता।

माता पिता या फिर भाई-बहन होने के नाते हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को 'अच्छे' व 'बुरे' स्पर्श से अवगत कराएं। बच्चे संवेदनशील होते हैं, वह अपने मन की अच्छी व बुरी भावनाओं को बखूबी पहचानते हैं। उन्हें बतायें कि अगर कोई भी उन्हें छूता है, चूमता है या फिर उनके जननांगों को सहलाता-दबाता है और उन्हें वह अच्छा नहीं लगता तो वे तुरन्त मां-बाप, भाई-बहन, टीचर या फिर जिसे वह चाहें इसके बारे में फ़ौरन बताएं। बच्चों को यह भी समझाएं कि अगर कोई उन्हें इस तरह प्यार करे, सहलाए या चूमे, जो उन्हें अच्छा नहीं लग रहा हो तो वे उसका तुरन्त विरोध करें- 'नहीं, मुझे ऐसे मत छुओ', 'दूर हटो', यह ग़लत है।' इस तरह के वाक्य वे ज़ोर से बोल सकते हैं। ऐसा करने से बच्चों को यक़ीन हो जायेगा कि अगर वह किसी बड़े या बुजुर्ग को इस हरकत के लिए मना करते हैं तो इस पर उन्हें डांट नहीं सुननी पड़ेगी। साथ ही आसपास के अन्य व्यक्तियों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित होगा जिससे हिंसक घबरा सकता है।

## यह हमारा भी इम्तिहान है

बच्चों की इस ट्रेनिंग के साथ-साथ हम बड़ों को चाहिए कि हम अपने बच्चों पर नज़र रखें। बच्चे के व्यवहार में किसी तरह का ख़ास परिवर्तन यौन हिंसा का सूचक हो सकता है। अगर बच्चा किसी व्यक्ति से अचानक डरने लगे या उसके सामने आने से कतराये या एकदम सहम कर ख़ामोश हो जाए तो यह आवश्यक है कि आप बच्चे से प्यार के साथ बात करें। उससे पूछे कि उसके इस डर का क्या कारण है। उसे यक़ीन दिलाएं कि जो भी वह चाहे वह आपको कह सकते हैं बिना हिचक, बिना डरे। और आपको बच्चे के ऊपर विश्वास और यकीन करना है।

एक अन्य स्थिति जिससे हमें परेशानी या कश्मकश का सामना करना पड़ सकता है वह है जब हमारे बच्चे का अपना बाप या मां अपने बच्चे के साथ यौन हिंसा करे। सगे बाप या मां के अलावा काफ़ी ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिसमें औरत का दूसरा पति (या माता) यानी बच्चे के सौतेले बाप-मां बच्चे के साथ यौन हिंसा करते हैं। हो सकता है आप इस से अनभिज्ञ हों पर यह भी हो सकता है कि आप सब कुछ जानते हुए भी ख़ामोश हों। यह आपका अपना इम्तिहान है। यक़ीकन इसे चुनौती देकर आप अपने सबसे अंतरंग संबंध को चुनौती दे रही हैं। पर याद रखिए कि इसे नकार कर या इसे अनदेखा करके आप अपना और बच्चे का भविष्य, उसका विश्वास और समूचा आस्तित्व कसौटी पर खड़ा करेंगी। फ़ैसला किसके हक़ में लेना है इसका निर्णय तो आपके अपने हाथ में है। पर सच बात तो यह है कि इस यौन हिंसा की मुख़ालफ़त आपको ही करनी होगी, अपनी पूरी हिम्मत और पूरी ईमानदारी के साथ।

काफ़ी दफ़ा हम सोचते हैं कि हमारे क़रीबी अपने हमारे ही बच्चों के साथ कोई ग़लत व्यवहार या यौन हिंसा जैसी हरकत नहीं कर सकते। पर यह सही नहीं है। बच्चे ऐसे मामलात में झूठ नहीं बोलते। इसलिए उनकी बात मानें और उनकी मदद करें। याद रखिए सही वक़्त पर लिया गया एक छोटा सा क़दम और एक छोटी सी अगुवाई बच्चे और आपके दोनों के लिए भविष्य में बहुत फ़ायदेमंद साबित होगी। इस समस्या को आज और अभी सम्बोधित करके हम बच्चों को भावनात्मक और शारीरिक परेशानियों से बचा सकते हैं। हो सकता है कि किसी यौन हिंसा की घटना के बारे में साफ़ बात करने या दोषी व्यक्ति का सामना करने के लिए आपको अपनी दोस्ती या अपने नज़दीक़ी रिश्तों को दांव पर लगाना पड़े। पर हिचकिचाएं नहीं और न ही इसके लिए शर्मिन्दा हों। यह ज़रूरी है और फिर ऐसे रिश्तों का क्या लाभ जो आपको और आपके अपनों को प्यार और सम्मान की जगह चोट और हिंसा पहुंचाएं।

बच्चे बहुत समझदार और चतुर होते हैं। आपके थोड़े से सहयोग से वे अपनी मदद ख़ुद कर पाएंगे। आप उन्हें निडर, सतर्क और ज़िम्मेदार बनाएं। इसके लिए उन्हें किसी जूडो

कराटे सिखाने वाली कक्षा में दाख़िला लेना ज़रूरी नहीं हैं। ज़रूरी है शारीरिक क्षमता, दिलेरी और अपने आत्म-विश्वास को मज़बूत बनाए रखने की। मार्शल तकनीक आदि आत्म-विकास व आत्म-विश्वास बढ़ाने के लिए अच्छे साधन हो सकते हैं पर अपने शरीर पर हक़ और भावनाओं पर इख़्तियार करने की शुरुआत जितनी जल्दी हो उतना बेहतर है। अन्य हिंसा की तरह बच्चों पर यौन हिंसा के मामलों में भी पुलिस या क़ानूनी मदद ली जा सकती है। पर सबसे पहले परिवार और समाज को भी इसके प्रति जागरूक बनाना बेहद ज़रूरी है।

**यौन हिंसा अपराध है**

सारांश यही है कि बच्चों पर किसी भी तरह की यौन हिंसा, चाहे वह प्यार से की गई हो या बहला-फुसला-धमका कर, एक घिनौना अपराध है। इसे अपराध मानकर ही इसका समाधान करना वक़्त की मांग है। इस पर एक कोमल, ख़ामोश रवैया नहीं बल्कि सोची-समझी रणनीति ईजाद की जानी चाहिए जिससे दोषी व्यक्ति ऐसी शर्मनाक हरकत दोबारा करने की हिम्मत न कर सके।

**जुही जैन** *नारीवादी कार्यकर्ता व लेखिका हैं।*